Ref-No. GGVS-2021/21/112

वर्मीवाश एक तरल जैविक खाद

बनाने की प्रक्रिया : वर्मीवाश इकाई बड़े बैरलड्रम, बड़ी बाल्टी या मिट्टी के घड़े का प्रयोग करके स्थापित की जा सकती है। प्लास्टिक, लोहे या सीमेन्ट के बैरल प्रयोग किये जा सकते हैं जिसका एक सिरा बन्द हो और एक सिरा खुला हो। सीमेंट का बड़ा पाईप भी प्रयोग किया जा सकता है। इस पाईप को एक ऊंचे आधार पर खड़ा रखकर नीचे की तरफ से बंद करें। नीचे की तरफ आधार के पास साईड में छेद (1 इंच चौड़ा) करें। इस छेद में टी पाईप डालकर वाशर की मदद से सील करें। अंदर की ओर आधा इंच पाईप रखें तथा बाहर इतना कि नीचे बर्तन आसानी से रखा जा सके। बाहर टी पाईप के छेद में नल फिट करें तथा दूसरे छेद में नट लगायें जो कि पाईप की समय–समय पर सफाई के काम आएगा। यह नल सुविधानुसार बैरल की पेंदी में भी लगाया जा सकता ह

गोयल ग्रामीण विकास संस्थान

श्रीरामशान्ताय

जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र

ग्राम जाखोड़ा, कैथून-सांगोद मार्ग, कोटा - 325001 (राजस्थान)

88759 95439

ggvs@goyalglobal.com www.ggvsglobal.com

राजस्थान जैविक प्रमाणीकरण संस्थान
जयपुर द्वारा प्रमाणित

वर्मीवाश इकाई

लगभग 16 दिन बाद, जब इकाई तैयार हो जाए, नल को बंद करके पांच लीटर क्षमता का एक बर्तन, जिसमें नीचे बारीक सुराख हों, इकाई के ऊपर लटका दें। ताकि बूंद–बूंद पानी नीचे गिरे। यह पानी धीरे–धीरे कम्पोस्ट के माध्यम से गुजरता है और ताजा वर्मीकम्पोस्ट से तत्व लेकर अपने साथ घोल लेता है। साथ ही केंचुओं के शरीर को धोकर भी पानी गुजरता है। नल को अगले दिन वर्मीवाश एकत्रित करने के लिये खोल लिया जाए। इसके बाद नल को बंद कर दिया जाए तथा ऊपर वाले बर्तन में पानी भर दिया जाए ताकि उसी प्रकार वर्मीवाश एकत्रित करने की प्रक्रिया चलती रहे। इकाई को ऊपर से बोरी से ढककर रखना चाहिये।

इकाई के ऊपरी सतह पर एकत्रित वर्मीकम्पोस्ट को समय–समय पर बाहर निकाला जा सकता है तथा गोबर व अवशेष डाले जा सकते हैं। या जब तक पूरा बैरल भर न जाए इसी प्रकार ऊपर फसल अवशेष डालते रहें तथा उसके बाद कम्पोस्ट को निकालकर दोबारा से सामग्री भरें। वर्मीवाश को इसी स्वरूप में स्टोर किया जा सकता है या धूप में सांद्रीकरण करके स्टोर कर सकते हैं। प्रयोग के समय इसमें पानी मिलाया जा सकता है। जो प्रयोगकर्ता की जरूरतों के अनुसार हो सकता है। इक्रीसेट, हैदराबाद में डॉ. ओ.पी. रूपेला द्वारा अपनायी जा रही वर्मीवाश विधि उपरोक्त विधि का ही एक प्रारूप है। इसमें फिल्टर के रूप में एक बदलाव किया गया है। एक गोलाकार चौड़ा सीमेंट का पाईप एक प्लेटफार्म पर रखकर सीमेंट से जोड़ें। इसके ऊपर एक और सीमेंट का पाईप रखें। दोनों के बीच एक मोटी लोहे की जाली रखें तथा सीमेंट से जोड़ें। नीचे वाले पाईप के साईड में नीचे एक नल लगायें। लोहे की जाली के ऊपर प्लास्टिक की जाली रूपी फिल्टर बिछायें जिसके किनारे बैरल से बाहर निकले हों। फिल्टर के ऊपर गोबर डालें व केंचुए डाल दें। इसके ऊपर फसल अवशेष पत्तियों आदि की 3–4 इंच मोटी परत बिछायें। यह अवशेष उसी रूप में या 2 प्रतिशत गोबर की स्लरी से भिगोकर डाल सकते हैं। प्रति सप्ताह इसी प्रकार अवशेष की परत बिछाते रहें। समय–समय पर पानी छिड़कते रहें। उचित तापमान बनाकर रखें। ऊपर से पाईप को एक पोटली, जिसमें पत्तेधराली भरे हों, से ढक देना चाहिये ताकि नमी बरकरार रहे तथा अंधेरा भी रहे।

लगभग एक माह बाद जब अच्छी वर्मीकम्पोस्ट बनने लग जाए तो वर्मीवाश लेना शुरू कर सकते हैं। ऊपर फब्बारे के रूप में धीरे–धीरे पानी डालें जो कि इकाई से गुजरता हुआ नीचे निकलेगा। चूंकि इकाई का निचला आधा हिस्सा खाली है अतः फिल्टर के माध्यम से पानी नीचे चला जाएगा। दिन में लगभग 10 लीटर पानी यूनिट से बाहर निकालें। इस वर्मीवाश की सांद्रता बढ़ाने के लिये इसे दोबारा से इकाई के माध्यम से गुजारें। इस प्रकार 4–5 चक्रों के बाद सुनहरे रंग का वर्मीवाश तैयार हो जाता है।

उपयोग – 10 गुना पानी मिलाकर छिड़काव करने पर फल फूल में वृद्धि में होती है।